अतिथि संपादक की कलम से.....।

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री

साहित्य रत्न का ग़ज़ल अंक प्रस्तुत करते हुए हमें बेहद खुशी हो रही है. खुशी इसलिए भी हो रही है कि इस अंक को सजाने और संवारने में हमारे मुख्य संपादक महोदय सुरजीत मान जलईया सिंह का बड़ा रागात्मक सहयोग रहा है.ये उसी का प्रतिफल है कि यह अंक आपके सामने है।

आमतौर पर संपादकीय लिखते हुए जो लंबी -चौड़ी बहस की जाती है.गरजने और बरसने का उसूल दिखता है. खिन्नाहट और झुंझललाहट सामने आती है. मेरा यहां ऐसा कुछ भी करने -लिखने का इरादा नहीं है. यहां ग़ज़ल की बात अपना आलेख लिखते हुए ग़ज़ल के समृद्द आलोचकों ने कर दी है. लगभग हिंदी ग़ज़ल के तमाम महत्वपूर्ण हस्ताक्षर की रचनाएं इसमें शामिल हैं.इस रचनात्मक सहयोग के लिए हम उनके हृदय से आभारी हैं. हमें विश्वास है कि जिस तरह से आज उत्कृष्ट ग़ज़लें लिखी जा रही हैं.ग़ज़ल में जिस तरह से आम लोगों की पीड़ा दिखलाई दे रही है,ग़ज़ल पर जिस तरह से शोध हो रहे हैं, पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है. विशेषांक निकल रहे हैं. लगातार गजल संकलन का प्रकाशन हो रहा है. वह दिन दूर नहीं है जब हिंदी कविता का मतलब ग़ज़ल समझा जाएगा. हिंदी का आम पाठक वर्ग अगर किसी विधा को तरीके और सलीके से समझ पाता है, तो वह ग़ज़ल ही है,क्योंकि ग़ज़ल में छंद है, बहर है,रस है,तरन्नुम और तकल्लुम है जो किसी भी रचना को कविता बनने के लिए लाजमी है।

आप इस अंक को पढ़ें, अपनी प्रतिक्रिया दें. क्योंकि आपका ऐसा करना ग़ज़ल की परंपरा को और मजबूत करने में कारगर सिद्ध होगा. बाकी बातें फिर कभी होंगी. आपकी प्रतिक्रिया और प्रेम का इंतजार रहेगा।